यह सुनि गुरु बानी, धनु गुन तानी, जानी द्विज दुःखदानि।
ताड़का संहारी, दारुन भारी, नारी अति बल जानि।।
मारीच बिडार्‌यो जलधि उतारयो, मार्‌यो सबल सुबाहु।
देवन गुन पर्ख्यो, पुष्पन बर्ख्यो, हर्ख्यो अति सुरनाहु।।10।।

शब्दार्थ– गुरु = गरिमा-युक्त। गुन = डोरी। दारुण = भयानक। बिडार्‌यो = भगा दिया। सबल = शक्तिशाली। सुबाहु = एक राक्षस का नाम। पर्ख्यो = परख लिया। सुरनाहु = सुरपति, इन्द्र।

प्रसंग–विश्वामित्र की आज्ञानुसार जब राम ने एक ही बाण में ताड़का का वध कर दिया तो देवताओं के मन में यह सोचकर संतोष हुआ कि राम, निश्चय ही रावण का वध करने में समर्थ हैं।

व्याख्या–महर्षि विश्वामित्र की इस गरिमा से युक्त वाणी को सुनकर कि पापिनी स्त्री की वध में कोई पाप नहीं होता, राम ने धनुष की डोरी खींची और ताड़का को ब्राह्मणों को कष्ट देने वाली, भारी भयंकर तथा अत्यन्त शक्ति से सम्पन्न नारी जानकर उसका वध कर दिया। मारीच को भगाकर समुद्र-पार कर दिया, शक्तिशाली सुबाहु को मार डाला। सभी देवताओं ने राम के इस गुण को परखा, अर्थात् उनकी वीरता का अनुमान लगा लिया और उन्होंने आकाश से पुष्पों की वर्षा कर दी। यह देखकर इन्द्र अपने मन में बहुत ही प्रसन्न हुआ, क्योंकि उसे विश्वास हो गया कि राम अवश्य ही रावण का वध करके देवताओं के दुःखों को दूर करेंगे।